प्रारंभिक परीक्षा

यूनेस्को ने 16 नए ग्लोबल जियोपार्क जोड़े

संदर्भ

यूनेस्को ने अपने ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क में 11 देशों के 16 नए स्थलों को जोड़ा है।

यूनेस्को ग्लोबल जियोपार्क(UNESCO Global Geoparks) क्या हैं?

- **यूनेस्को ग्लोबल जियोपार्क एकल, एकीकृत भौगोलिक क्षेत्र हैं, जहां अंतर्राष्ट्रीय भूवैज्ञानिक महत्व के स्थलों और परिदृश्यों को संरक्षण, शिक्षा और सतत विकास की समग्र अवधारणा के साथ प्रबंधित किया जाता है।**
- वर्तमान में **50 देशों में 229 यूनेस्को ग्लोबल जियोपार्क हैं।**
- **मुख्य विशेषताएं:**
    - वैश्विक मूल्य की भूवैज्ञानिक विरासत को मान्यता देता है।
    - सतत विकास, भू-शिक्षा, भू-पर्यटन और सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देता है।
    - सांस्कृतिक और वैज्ञानिक परंपराओं को बनाए रखने में स्थानीय और स्वदेशी समुदायों की भागीदारी को प्रोत्साहित करता है।
- **इसकी स्थापना 2015 में संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (UNESCO) द्वारा की गई थी।**
- **वर्तमान में, भारत का कोई भी स्थल यूनेस्को की ग्लोबल जियोपार्क सूची में शामिल नहीं है।**

यूनेस्को(UNESCO) -

- **संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन(UNESCO) संयुक्त राष्ट्र(यूएन) की एक विशेष एजेंसी है।**
- **इसकी स्थापना 1945** में **राष्ट्र संघ की बौद्धिक सहयोग पर अंतर्राष्ट्रीय समिति** के उत्तराधिकारी के रूप में की गई थी।
- **सदस्य**: यूनेस्को के **194 सदस्य और 8 सहयोगी सदस्य हैं।**
    - भारत यूनेस्को की स्थापना के समय से ही उसका सदस्य रहा है।
- **मुख्यालय - पेरिस (फ्रांस)।**

स्रोत: Indian Express - Global Geoparks

तरलता कवरेज अनुपात(Liquidity Coverage Ratio)

संदर्भ

भारतीय रिजर्व बैंक ने LCR के संबंध में नए दिशानिर्देश जारी किए हैं।

LCR (तरलता कवरेज अनुपात) क्या है?

- **LCR उच्च गुणवत्ता वाली तरल परिसंपत्तियों(HQLA) की न्यूनतम राशि को संदर्भित करता है जिसे बैंक को 30-दिवसीय तनाव परिदृश्य में अल्पकालिक दायित्वों को पूरा करने के लिए रखना चाहिए।**
- उच्च LCR के कारण बैंकों को अत्यधिक तरल परिसंपत्तियों का बड़ा हिस्सा अपने पास रखने की आवश्यकता होती है, जिससे मुद्रा आपूर्ति कम हो जाती है।
- रन-ऑफ फैक्टर का उपयोग यह अनुमान लगाने के लिए किया जाता है कि बैंक की कितनी देनदारियां (जैसे जमा) तनाव के तहत "रन ऑफ" (अर्थात, वापस ली जा सकती हैं) हो सकती हैं।

LCR मानदंडों में प्रमुख परिवर्तन -

- **डिजिटल जमा के लिए कम रन-ऑफ फैक्टर:**
  - यूपीआई जैसे प्लेटफॉर्म सहित इंटरनेट और मोबाइल बैंकिंग (आईएमबी) के माध्यम से सुलभ खुदरा जमा के लिए अतिरिक्त 2.5% रन-ऑफ फैक्टर आवंटित करना आवश्यक है। (पहले - 5%)
- **जमा स्थिरता के आधार पर समायोजित रन-ऑफ दरें:**
  - **स्थिर आईएमबी-सक्षम खुदरा जमा**: रन-ऑफ फैक्टर 5% से बढ़कर 7.5% हो गया।
- **गैर-वित्तीय इकाई वित्तपोषण का पुनर्वर्गीकरण:**
  - ट्रस्ट, साझेदारी और एलएलपी जैसी संस्थाओं से वित्तपोषण पर अब 40% की दर से कटौती होगी, जो पहले 100% थी।
- **लघु व्यवसाय ग्राहक वित्तपोषण का उपचार:**
  - गैर-वित्तीय लघु व्यवसाय ग्राहकों से असुरक्षित थोक वित्तपोषण को खुदरा जमा के समान माना जाएगा, तथा इस पर 2.5% अतिरिक्त कर लगेगा।

यूपीएससी पीवाईक्यू

प्रश्न: भारत में किसी फर्म के "ब्याज कवरेज अनुपात" शब्द का क्या महत्व है? (2020)

1. इससे उस फर्म के वर्तमान जोखिम को समझने में मदद मिलती है जिसे बैंक ऋण देने जा रहा है।
2. यह उस फर्म के उभरते जोखिम का मूल्यांकन करने में मदद करता है जिसे बैंक ऋण देने जा रहा है।
3. उधार लेने वाली कंपनी का ब्याज कवरेज अनुपात जितना अधिक होगा, उसकी ऋण चुकाने की क्षमता उतनी ही खराब होगी।

नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:

(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 2
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

उत्तर: (**a**)

स्रोत: [Indian Express - LCR]

समाचार संक्षेप में

भारतनेट(BharatNet)

- **यह भारत सरकार की एक महत्वाकांक्षी परियोजना है जिसका उद्देश्य देश की सभी ग्राम पंचायतों को ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी प्रदान करना है।**
- यह दुनिया की सबसे बड़ी ग्रामीण दूरसंचार परियोजनाओं में से एक है।
- **कार्यान्वयन एजेंसी**: भारत ब्रॉडबैंड नेटवर्क लिमिटेड (BBNL)।
- **भारतनेट परियोजना को डिजिटल भारत निधि के माध्यम से वित्त पोषित किया जाता है।**

डिजिटल भारत निधि (DBN) के बारे में -

- **डिजिटल भारत निधि सभी दूरसंचार ऑपरेटरों के समायोजित सकल राजस्व(AGR) पर 5% यूनिवर्सल सर्विस लेवी लगाकर उत्पन्न की गई निधियों का एक पूल है।**
- इसने यूनिवर्सल सर्विस ऑब्लिगेशन फंड (**USOF**) की जगह ली है जिसे भारतीय टेलीग्राफ (संशोधन) अधिनियम, 2003 के तहत स्थापित किया गया था।
- 'दूरसंचार अधिनियम, 2023' के अनुसार यूनिवर्सल सर्विस ऑब्लिगेशन फंड, डिजिटल भारत निधि बन गया है।
- **DBN के कार्य:** वंचित ग्रामीण, दूरदराज और शहरी क्षेत्रों में दूरसंचार सेवा की पहुँच और वितरण को बढ़ावा देना।

स्रोत: **PIB - BharatNet**

इस्पात उद्योग

- घरेलू इस्पात उद्योग को कम लागत वाले आयात में वृद्धि से बचाने के लिए, **भारत सरकार ने कुछ गैर-मिश्र धातु और मिश्र धातु इस्पात फ्लैट उत्पादों पर 12 प्रतिशत का अनंतिम सुरक्षा शुल्क लगाया है।**
- **शीर्ष इस्पात उत्पादक देश:** (1) चीन (2) भारत (3) जापान (4) संयुक्त राज्य अमेरिका (5) रूस

भारत में इस्पात उद्योग -

- **भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा इस्पात उत्पादक है (चीन के बाद)।**
- कच्चे इस्पात का उत्पादन (2023): ~125 मिलियन टन (MT)
- **प्रमुख कर्ता:** सेल, टाटा स्टील, JSW स्टील, JSPL आदि।
- **रोज़गार**: प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से **2 मिलियन से अधिक लोगों को रोज़गार** देता है।
- **भारतीय इस्पात उद्योग के समक्ष चुनौतियाँ:**
    - सस्ते आयात में वृद्धि, विशेष रूप से चीन, दक्षिण कोरिया, वियतनाम, आदि से।
    - वैश्विक बाजारों में मूल्य अस्थिरता
    - उच्च इनपुट लागत: कोकिंग कोयला, रसद।

ग्रीन स्टील क्या है?

- **ग्रीन स्टील एक प्रकार का स्टील है जो किसी भी जीवाश्म ईंधन का उपयोग किए बिना निर्मित किया जाता है।**
- यह उत्पादन में हाइड्रोजन, कोयला गैसीकरण या बिजली जैसे वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करता है।

स्रोत: **PIB - Steel Sector**

चावल में आर्सेनिक

- एक हालिया अध्ययन के अनुसार जलवायु परिवर्तन के कारण चावल में आर्सेनिक संदूषण बढ़ने की संभावना है।

अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष -

- जब CO_2 का स्तर और तापमान एक ही समय में बढ़ता है, तो चावल में आर्सेनिक का स्तर भी बढ़ जाता है।
- यह आर्सेनिक उस मिट्टी और पानी से आता है जहाँ चावल उगाया जाता है।
- पानी से भरे खेत (धान), जहाँ आमतौर पर चावल उगाया जाता है, पौधे के लिए आर्सेनिक को अवशोषित करना आसान बनाते हैं।

आर्सेनिक क्या है?

- **आर्सेनिक एक विषैला तत्व है जो प्राकृतिक रूप से मिट्टी और पानी में पाया जाता है, और औद्योगिक प्रदूषण से भी आता है।**
- चावल में बनने वाला आर्सेनिक का रूप (जिसे अकार्बनिक आर्सेनिक कहा जाता है) मनुष्यों के लिए विशेष रूप से हानिकारक है।
- लम्बे समय तक उच्च आर्सेनिक स्तर वाले चावल खाने से निम्नलिखित समस्याएं हो सकती हैं:
  - **कैंसर**: त्वचा, मूत्राशय और फेफड़े
  - हृदय रोग, मधुमेह, गर्भावस्था संबंधी समस्याएं, कमजोर प्रतिरक्षा आदि।
- **अधिक जोखिम वाले देश:** भारत, बांग्लादेश, चीन, वियतनाम, इंडोनेशिया।

स्रोत: **Indian Express - Arsenic in Rice**

नाबालिगों के लिए बैंकिंग सुविधाओं का विस्तार

- भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने हाल ही में नाबालिगों के लिए उपलब्ध बैंकिंग सुविधाओं से संबंधित नियमों में संशोधन किया है।

RBI द्वारा किये गए परिवर्तन -

- **10 वर्ष या उससे अधिक आयु के नाबालिग अब:**
  - बचत और सावधि जमा खाते स्वतंत्र रूप से खोल सकते है और संचालित कर सकते है (किसी अभिभावक की आवश्यकता के बिना)।
  - अतिरिक्त बैंकिंग सेवाओं का उपयोग कर सकते है (यदि बैंक द्वारा अनुमति दी गई हो)।
- **कुछ सुविधाएं बैंक के विवेक पर होंगी**: बैंक निर्णय ले सकते हैं:
  - लेन-देन पर राशि की सीमा
  - नियम और शर्तें, उनकी जोखिम प्रबंधन नीतियों पर आधारित हैं।
  - क्या अतिरिक्त सुविधाएं प्रदान की जानी चाहिए जैसे:
    - इंटरनेट बैंकिंग
    - एटीएम/डेबिट कार्ड
    - चेक बुक
- **10 वर्ष से कम आयु के नाबालिग भी खाता खोल सकते हैं, लेकिन केवल प्राकृतिक या कानूनी अभिभावक के माध्यम से।**

नाबालिग खातों पर प्रतिबंध (सभी आयु वर्ग) -

- **ओवरड्राफ्ट की अनुमति नहीं**
  - इन खातों में हमेशा क्रेडिट शेष होना चाहिए।
  - किसी भी परिस्थिति में ऋणात्मक शेष में नहीं जा सकते।

- **उचित परिश्रम आवश्यक**
  - बैंकों को यह करना होगा:
    - नाबालिगों के खाते खोलते समय उचित पृष्ठभूमि सत्यापन करना।
    - किसी भी असामान्य गतिविधि के लिए खातों की नियमित निगरानी करना (चल रही उचित जांच)।

स्रोत: Indian Express - Bank account for minors

अल्ट्रा-टिनी पेसमेकर(Ultra-Tiny Pacemaker)

- हाल ही में वैज्ञानिकों ने चावल के दाने से भी छोटा पेसमेकर बनाया है।

पेसमेकर क्या है?

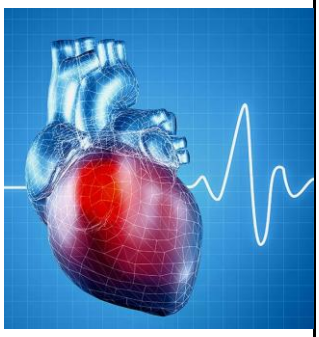

- **पेसमेकर एक छोटा चिकित्सा उपकरण है जो हृदय को सामान्य गति से धड़कने में मदद करता है।**
- यह हृदय की मांसपेशियों को विद्युत संकेत भेजता है जब हृदय की धड़कन बहुत धीमी, अनियमित या रुक जाती है।
- **पेसमेकर का उपयोग ब्रैडीकार्डिया (धीमी गति से हृदय गति) जैसी हृदय स्थितियों वाले लोगों में किया जाता है, विशेष रूप से सर्जरी के बाद या जन्मजात (जन्म से) हृदय रोग वाले शिशुओं में।**

नए खोजे गए पेसमेकर के बारे में -

- यह चावल के दाने से भी छोटा है।
- यह ओक्लाहोमा विश्वविद्यालय द्वारा बनाए गए पिछले सबसे छोटे पेसमेकर से 2.5 गुना छोटा है।
- इसे सुई का उपयोग करके सीधे हृदय में इंजेक्ट किया जा सकता है - इसके लिए किसी सर्जरी की आवश्यकता नहीं है।
- पारंपरिक अस्थायी पेसमेकर को लगाने और बाद में निकालने के लिए ओपन-हार्ट या एंडोवास्कुलर सर्जरी की आवश्यकता होती है।
- **प्रमुख विशेषताऐं:**
  - यह **बायोरिसॉर्बेबल मटीरियल** से बना है, यह एक निश्चित समय के बाद शरीर में स्वाभाविक रूप से घुल जाता है। इसलिए, उपयोग के बाद इसे हटाने की कोई आवश्यकता नहीं है।
  - कोई बैटरी या बाहरी पावर स्रोत नहीं (स्वयं संचालित):
    - पेसमेकर के निचले भाग में दो इलेक्ट्रोड होते हैं।
    - ये इलेक्ट्रोड शरीर के तरल पदार्थों (जैसे रक्त) के साथ क्रिया करके बिजली उत्पन्न करते हैं - जो एक छोटी रासायनिक बैटरी के समान है।
  - इसे एक बाहरी पैच द्वारा नियंत्रित किया जाता है। मरीज छाती पर (शरीर के बाहर) एक छोटा सा पैच पहनता है जो हृदय गति पर नज़र रखता है।

स्रोत: The Hindu - Tiny Pacemaker

संपादकीय सारांश

भारत की रचनात्मक अर्थव्यवस्था के लिए नए रास्ते

संदर्भ

चूंकि भारत 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने का प्रयास कर रहा है, इसलिए उसे अपनी नवाचार रणनीति में सुधार करना होगा तथा सभी स्तरों पर रचनात्मकता को बढ़ावा देना होगा।

भारत में रचनात्मक अर्थव्यवस्था की वर्तमान स्थिति -

- **आर्थिक मूल्य**: 2024 तक, भारत की रचनात्मक अर्थव्यवस्था का मूल्य $30 बिलियन है। यह कुल कार्यबल के लगभग 8% को रोजगार प्रदान करता है, जिसमें मीडिया, डिज़ाइन, शिल्प और डिजिटल सेवाएँ जैसे क्षेत्र शामिल हैं।
- **निर्यात योगदान**: 2019 में, भारत ने लगभग 121 बिलियन डॉलर मूल्य की रचनात्मक वस्तुओं और सेवाओं का निर्यात किया - इसमें से 100 बिलियन डॉलर सॉफ्टवेयर डिजाइन, आईटी और डिजिटल मीडिया जैसी सेवाओं से आए।
- **विकास की प्रवृत्ति**: अकेले 2024 में, भारत के रचनात्मक निर्यात में 20% की वृद्धि हुई, जिससे 11 बिलियन डॉलर से अधिक की कमाई हुई, जो स्थिर वैश्विक मांग का संकेत है।
- **प्रमुख क्षेत्र**: डिजाइन क्षेत्र भारत के रचनात्मक वस्तुओं के निर्यात का बड़ा हिस्सा (87.5%) बनाता है, जबकि पारंपरिक कला और शिल्प का योगदान लगभग 9% है।
- **क्रिएटिव इकोनॉमी आउटलुक 2024:** रचनात्मक अर्थव्यवस्था पर संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास (यूएनसीटीएडी) की रिपोर्ट के अनुसार, तीन क्षेत्र रचनात्मक अर्थव्यवस्था (2022) के मुख्य योगदानकर्ता हैं: सॉफ्टवेयर सेवाएं (41.3%), अनुसंधान और विकास (30.7%), विज्ञापन, बाजार अनुसंधान और वास्तुकला (15.5%)।

भारत में रचनात्मकता और नवाचार से संबंधित चिंताएँ -

- **रचनात्मकता और नवाचार के बीच अंतर**: भारत में कई रचनात्मक व्यक्ति और विचार हैं, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में, लेकिन अधिकांश विचार उपयोगी उत्पादों या व्यवसायों में नहीं बदल पाते हैं । यह विकास के लिए धन, मार्गदर्शन या प्लेटफार्मों की कमी के कारण है।
- **स्थानीय स्तर पर सीमित निवेश**: जबकि शहरी तकनीकी क्षेत्रों को महत्वपूर्ण निवेश मिलता है (उदाहरण के लिए, जलवायु तकनीक को 2023 में 2.85 बिलियन डॉलर मिले), जमीनी स्तर के नवाचारों को बहुत कम वित्तीय सहायता मिलती है।
- **कमजोर बौद्धिक संपदा (आईपी) समर्थन:** कई स्थानीय रचनाकारों के पास पेटेंट या डिजाइन पंजीकरण जैसी सस्ती या सरल आईपी सुरक्षा तक पहुंच नहीं है, जिससे उनके विचारों की नकल करना आसान हो जाता है।
- **कोई एकीकृत नीति नहीं:** भारत के पास वर्तमान में रचनात्मक अर्थव्यवस्था को मार्गदर्शन या समर्थन देने के लिए कोई व्यापक राष्ट्रीय नीति नहीं है। विभिन्न क्षेत्र समन्वय के बिना अलग-अलग काम करते हैं।
- **शहरी-ग्रामीण असंतुलन**: शहरों में रचनात्मक क्षेत्रों को डिजिटल उपकरणों और फंडिंग से लाभ मिलता है। लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों, जैसे हस्तशिल्प या पारंपरिक कौशल, को कम फंडिंग मिलती है और उनमें गिरावट आती है।

भारत की रचनात्मक अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के नए रास्ते -

- **एक जिला एक नवाचार (ODOI)**: ODOP (एक जिला एक उत्पाद) मॉडल से प्रेरित होकर, प्रत्येक जिला एक अद्वितीय नवाचार की पहचान और उसे बढ़ावा दे सकता है, चाहे वह डिजाइन, प्रौद्योगिकी या सांस्कृतिक उत्पादों में हो।
- **जमीनी स्तर के नवाचारों को बढ़ावा देना:** मिट्टीकूल रेफ्रिजरेटर, उभयचर साइकिल, या पैडल वाशिंग मशीन जैसे जमीनी स्तर के रचनात्मक विचारों को बढ़ावा देने में निवेश करना।

    - ग्रासरूट इनोवेशन ऑग्मेंटेशन नेटवर्क (जीआईएएन) के परिणामस्वरूप सैकड़ों ग्रासरूट रचनात्मक विचारों को लोकप्रिय बनाया गया है।
- **अनौपचारिक क्षेत्र के लिए आईपी प्रणाली में सुधार:** छोटे पैमाने के आविष्कारकों और पारंपरिक कलाकारों के लिए सरलीकृत, कम लागत वाली आईपी पंजीकरण प्रक्रिया बनाएं ताकि उनके नवाचारों की रक्षा की जा सके और उनसे कमाई की जा सके।
- **समर्पित रचनात्मक अर्थव्यवस्था नीति**: एक एकीकृत राष्ट्रीय नीति विकसित करना जो बेहतर समन्वय के लिए संस्कृति, एमएसएमई, शिक्षा और प्रौद्योगिकी से संबंधित मंत्रालयों को एक ढांचे के तहत एक साथ लाए।
- **प्रकृति-प्रेरित डिजाइन (बायोमिमिक्री) को प्रोत्साहित करना**: वास्तविक दुनिया की समस्याओं को हल करने के लिए प्राकृतिक संरचनाओं से सबक लें - जैसे इंडोनेशिया की एंट्रोडैम परियोजना, जिसमें बाढ़ के प्रबंधन के लिए चींटी के घोंसले के डिजाइन का उपयोग किया गया था।
- **सार्वजनिक-निजी निवेश प्लेटफ़ॉर्म**: रचनात्मक स्टार्ट-अप, ग्रामीण नवाचार और टिकाऊ उत्पाद डिज़ाइन पर ध्यान केंद्रित करने वाले समर्पित निवेश फंड लॉन्च करना। स्थानीय रचनाकारों का समर्थन करने के लिए सीएसआर फंडिंग को प्रोत्साहित करना।

एंट्रोडैम परियोजना (इंडोनेशिया)

- **पहल:** बाढ़ से निपटने के लिए बिनस स्कूल, बेकासी के छात्रों द्वारा संकल्पित।
- **प्रेरणा**: **बायोमिमिक्री** - भारतीय हार्वेस्टर चींटियों के घोंसलों और गुलाब की पंखुड़ियों, मूंगा और पक्षी शरीर रचना जैसे प्राकृतिक तत्वों पर आधारित संरचनाएं।
- **प्रभाव**: यह प्रणाली प्राकृतिक सुरंगों की तरह पानी को पुनर्निर्देशित करती है, तथा दिखाती है कि किस प्रकार प्रकृति-प्रेरित समाधान स्थानीय समस्याओं का समाधान कर सकते हैं।
- **भारत के लिए सीख**: स्कूल और कॉलेज स्तर के छात्र वास्तविक दुनिया के समाधानों के इनक्यूबेटर हो सकते हैं।
    - विचारों से नवाचार की ओर बढ़ने के लिए मार्गदर्शन और प्रारंभिक वित्तपोषण की आवश्यकता।

स्रोत: [The Hindu: New pathways for India's creative economy]

भारत-चीन संबंध

संदर्भ

इस वर्ष भारत-चीन संबंधों की 75वीं वर्षगांठ है।

भारत-चीन संबंधों में विकास -

- **आदर्शवाद से यथार्थवाद तक**: रिश्ते का प्रारंभिक चरण एशियाई एकजुटता और साझा सभ्यतागत सम्मान पर आधारित था। लेकिन 1962 के युद्ध और 2020 के गलवान संघर्ष के बाद, यह रणनीतिक अविश्वास और यथार्थवाद की ओर बढ़ गया।
- **संवाद से निवारण तक**: जबकि कूटनीति जारी है, दोनों देशों ने वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर, विशेष रूप से पूर्वी लद्दाख में सैन्यीकरण कर दिया है, जो संवाद से तैयारी की ओर बदलाव को दर्शाता है।
- **असंरचित व्यापार से सामरिक प्रतिस्पर्धा तक**: समय के साथ आर्थिक अंतरनिर्भरता बढ़ी है, तथा चीन एक प्रमुख व्यापारिक साझेदार बन गया है, लेकिन व्यापार असंतुलन और सामरिक चिंताओं के कारण भारत चयनात्मक वियोजन और आपूर्ति श्रृंखला विविधीकरण की ओर अग्रसर है।
- **क्षेत्रीय सहयोग से क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा तक:** दक्षिण एशियाई बुनियादी ढांचे में चीन की बढ़ती भूमिका ने भारत को अपनी विकास पहल और कूटनीति के साथ संतुलन बनाने के लिए प्रेरित किया है।

चिंताएं क्या थीं?

- **सीमा पर सैन्यीकरण और आक्रमण:**
  - **गलवान घाटी संघर्ष (2020):** चीन की सेना वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) के विवादित क्षेत्रों में प्रवेश कर गई, जिसके कारण दोनों पक्षों में हिंसक झड़पें हुईं और मौतें हुईं - दशकों में पहली बार मौतें हुईं।
  - **एलएसी पर बुनियादी ढांचे का निर्माण:** चीन ने सीमा के पास, विशेष रूप से पूर्वी लद्दाख और अरुणाचल प्रदेश में तेजी से सड़कें, पुल, हवाई पट्टियां और गांव बनाए हैं , जिससे स्थायी सैन्य खतरा पैदा हो गया है।
- **सामरिक घेराव (मोतियों की माला)**:
  - भारत के पड़ोस में बंदरगाहों और बुनियादी ढांचे में भारी निवेश किया है, जिसमें हंबनटोटा बंदरगाह (श्रीलंका), ग्वादर बंदरगाह (पाकिस्तान), पोखरा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा (नेपाल) शामिल हैं ।
    - ये हिंद महासागर क्षेत्र में भारत के सामरिक प्रभाव और सुरक्षा को चुनौती देते हैं।
  - संयुक्त सैन्य अभ्यास और हथियारों की आपूर्ति सहित चीन-पाकिस्तान के घनिष्ठ रक्षा संबंध भारत की सुरक्षा चिंताओं को बढ़ाते हैं, विशेष रूप से गिलगित-बाल्टिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) में।
- **व्यापार असंतुलन और आर्थिक निर्भरता:** भारत के विरुद्ध विशाल व्यापार अधिशेष: चीन ने भारत को 100 बिलियन डॉलर से अधिक मूल्य की वस्तुओं का निर्यात किया (2024-25), जबकि भारत का चीन को निर्यात बहुत कम है - जिससे रणनीतिक आर्थिक भेद्यता पैदा हो रही है।
  - **प्रमुख क्षेत्रों में निर्भरता:** भारत निम्नलिखित क्षेत्रों में चीनी आयात पर बहुत अधिक निर्भर है:
    - फार्मास्यूटिकल्स (एपीआई)
    - इलेक्ट्रॉनिक्स और दूरसंचार
    - सौर पैनल और अर्धचालक
- **डिजिटल और तकनीकी प्रभाव:**
  - **ऐप इकोसिस्टम और इलेक्ट्रॉनिक्स पर नियंत्रण:** प्रतिबंध से पहले, TikTok , PUBG और UC Browser जैसे चीनी ऐप का भारत में बड़ा उपयोगकर्ता आधार था। भारत ने डेटा और राष्ट्रीय सुरक्षा चिंताओं का हवाला देते हुए 300 से अधिक चीनी ऐप पर प्रतिबंध लगा दिया।

    - **हुआवेई और 5G बहिष्कार:** भारत ने जासूसी की आशंकाओं के चलते हुआवेई और जेडटीई जैसी चीनी दूरसंचार दिग्गजों को 5G परीक्षणों और बुनियादी ढांचे से बाहर रखा है।
- **कूटनीतिक संदेश और सॉफ्ट पावर चालें:** चीन आर्थिक सहायता, बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) परियोजनाओं और राजनीतिक बयानों (जैसे, बीजिंग में बांग्लादेशी नेताओं द्वारा) का उपयोग भारत के क्षेत्रीय कद को कमजोर करने के लिए करता है।
- **वैश्विक मंचों पर भारत को रोकना:** चीन ने बार-बार भारत के निम्नलिखित प्रयासों को अवरुद्ध किया है:
    - पाकिस्तान स्थित आतंकवादियों (जैसे, मसूद अजहर) को संयुक्त राष्ट्र प्रतिबंध सूची में शामिल करना।
    - परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (एनएसजी) में शामिल होंना।
- **पर्यावरण एवं जल संबंधी चिंताएं:**
    - **यारलुंग त्सांगपो (ब्रह्मपुत्र) पर बांध की योजना:** चीन अरुणाचल प्रदेश के पास एक विशाल बांध का निर्माण कर रहा है, जो भारत की जल सुरक्षा और पारिस्थितिकी को प्रभावित कर सकता है।
    - **जल बंटवारा संधि का अभाव:** भारत और चीन के बीच सीमा पार की नदियों पर कोई संधि नहीं है, और चीन ने कभी-कभी जल विज्ञान संबंधी आंकड़ों को रोक लिया है या विलंबित कर दिया है, जिससे पूर्वोत्तर भारत में बाढ़ पूर्वानुमान और आपदा तैयारी प्रभावित हुई है।

क्या किया जाना चाहिए (75वीं वर्षगांठ पर) -

- **संघर्ष को रोकने के लिए "सुरक्षा घेरे" बनाना:** सैन्य और राजनयिक स्तरों पर अधिक स्थिर संचार तंत्र और विश्वास-निर्माण उपाय स्थापित करना।
- **"प्रतिस्पर्धात्मक सह-अस्तित्व" का अनुसरण करना**: प्रतिद्वंद्विता को संरचनात्मक रूप से स्वीकार करें लेकिन इसे जिम्मेदारी से प्रबंधित करें - जहां संभव हो वहां सहयोग करें, जहां आवश्यक हो वहां प्रतिस्पर्धा करना।
- **अर्थव्यवस्था में विविधता लाना**: घरेलू विनिर्माण में निवेश करें, चीनी आपूर्ति श्रृंखलाओं पर निर्भरता कम करें, तथा सेमीकंडक्टर, इलेक्ट्रॉनिक्स और फार्मास्यूटिकल्स जैसे रणनीतिक क्षेत्रों को बढ़ावा देना ।
- **क्षेत्रीय कूटनीति को मजबूत करना**: दक्षिण एशियाई पड़ोसियों के साथ केवल प्रतिक्रियात्मक कूटनीति नहीं, बल्कि दीर्घकालिक दृष्टिकोण के साथ जुड़ाव को गहरा करना।
- **कथात्मक और प्रभावकारी रणनीति**: सम्मोहक कूटनीतिक कथाएं गढ़ें, क्षेत्रीय कहानी पर अपना अधिकार जमाएं, तथा भारत के भूगोल और रणनीति को चीन द्वारा गढ़े जाने का विरोध करें।
- **पारिस्थितिकी एवं सामरिक मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित करना:** यारलुंग त्सांगपो पर चीन के बांध जैसे खतरों का दृढ़ता से जवाब देना, डेटा साझाकरण संधियों पर जोर देना, तथा पर्यावरणीय सुरक्षा को सामरिक मुद्दे के रूप में उठाना।

स्रोत: **The Hindu: India, China at 75 — a time for strategy, not sentiment**